विद्यानाथ झा 'विदित'

विद्यानाथ झा 'विदित' मैथिलीक जानल-मानल रचनाकार छथि। हिनक जन्म दरभंगा जिलाक मौहार गाममे 5 जून, 1942 कऽ भेलनि। मैथिलीमे एम.ए, पीएच.डी. कयलनि, संताल परगना कालेज, दुमकामे मैथिलीक प्राध्यापक ओ विभागाध्यक्ष भेलाह। ओही कालेजक प्राचार्य-पद पर कार्य करैत सेवा-नेवृत भेलाह।

विद्यानाथ झा 'विदित' गत शताब्दीक सातम दशकमे साहित्य-रचना प्रारम्भ कयलनि। तकरा बाद हिनक लेखनी कहियो विराम नहि लेलक। लगातार लिखि रहल छथि। वास्तविकता ई अछि जे आयुमे वृद्धिक संग-संग हिनक लेखनक गति सेहो बढ़ल अछि। ई कविता, कथा, उपन्यास, निबन्ध, समीक्षा-सभ विधामे लिखैत छथि। लगभग बीसटा हिनक प्रकाशित पोथी छनि। 'मैथिली ओ संताली' हिनक महत्वपूर्ण अवदान अछि। एकर अतिरिक्त मानव कल्प, महोदय मन्वन्तर, बहुरिया, प्रालब्ध, विप्लव बेसरा, कोसिल्या, कर्पूरिया, ओ 'मिथिला मिहिर'मे धारावाहिक उपन्यास, फूटल चूड़ी-कथा संग्रह प्रकाशित सिंगरहार, सुरासुन्दरी, (काव्य) आदि पोथी प्रकाशित अछि। सम्प्रति उपन्यास -लेखन पर हिनक बेसी जोर छनि। संगहि मैथिली भाषा आ साहित्यक विकास लेल सेहो दत्तचित्त छथि। साहित्य अकादेमी, दिल्लीमे मैथिलीक प्रतिनिधि छथि।

काव्य सन्दर्भ - प्रस्तुत कविता मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित कविता संग्रहसँ लेल गेल अछि। कविता देशक, मातृभूमिक, वन्दना थिक। एहि क्रममे मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहासकेँ प्रेरणाक रूपमे राखल गेल अछि। मिथिलाक अतीत प्रेरणादायक अछि। वेदक मंत्र, स्मृति-पुराण, सीता-सन बेटी, भारती-सन कुलवधू, विद्यापति सदृश कवि, रामायण-सन ग्रन्थक रचनाकार कवि चन्द्र -सब प्रेरक बनि कऽ मार्गदर्शन लेल उपलब्ध छथि। ई सभ त्याग, बलिदान आ कर्मठताक संदेश दैत छथि। ई कविता जन्मभूमिक गुण-गौरवक स्मरण द्वारा आजुक लोककेँ प्रेरित करबाक प्रयास थिक।

वन्दना

हित-हित वलिदान होयबा सँ समुज्ज्वल कर्म की ?
मातृभूमिक वन्दना सँ श्रेष्ठ पावन धर्म की ?

जाहि धरती पर जनक केर
दीप्त ज्ञान - विवेक ।
याज्ञवल्क्यक अमित - तेजक
भेल हो अभिषेक ।।
जाहि ठामक माटि श्रुतिमय
पानि स्मृतिमय रहल हो।
वायु केर सिहकी ऋचामय
घर-आँगनमे बहल हो ।।

ताहि भूमिक अर्चनासँ श्रेष्ठ दोसर धर्म की ?
अछि अयाचिक दूभि आसन सँ विमल मृगचर्म की ?

खेत मे उपजलि जतय श्री
स्वयं, धी बनि, जानकी।
जाहि ठामक कुल बधू बनि
पूजिता छथि भारती।।
जाहि भूमिक कविक अपरूप
कंठमे कोकिल बसल हो।
जाहि भूमिक शैव कवि सँ
गेल रामायण रचल हो।।

ताहि भूमिक चित्रसँ बढ़ि आर दोसर यंत्र की ?

साधनामय भूमिसँ बढ़ि साधना केर मंत्र की ?

जाहि भूमिक भैरबी केर कर सुशोभित खड्ग हो।
शिव जकर चाकर स्वयं ओ भूमि सरिपहुँ स्वर्ग हो।।
मोक्षमय स्मृति अतीतक बाल बोधक ठोरपर हो।
ताहि भूमिक चरण भावी कियैन प्रगतिक छोरपर हो ।।

मातृभूमिक माँटि सँ बढ़ि श्रेष्ठ आर दुलार की ?

जन्मभूमि निमित्त शीशक दान सँ लघु आर की ?

शब्दार्थ :

समुज्ज्वल - चकमक

पावन - पवित्र

दीप्त - चमकै/ प्रभायुद्र

अमित - असीम

अभिषेक - मंत्र पढ़ल जल छीटब

श्रुति - वेद

स्मृति - विधि-विधानक पोथी, जेना-मनुस्मृति

सिहकी - वायुक वेग

ऋचामय - ऋग्वेदक मन्त्रसँ युक्त

अर्चना - पूजा

विमल - स्वच्छ , निर्दोष

मृगचर्म - हरिणक-छाल

भैरवी - भयानक रूपवाली देवी

खड्ग - तरूआरि

धी - बेटी

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'वन्दना' कविताक रचयिता छथि -

(क) विद्यानाथ झा 'विदित' (ख) बुद्धिनाथ मिश्र

(ग) विद्यापति (घ) उदय चन्द्र झा 'विनोद'

(ii) विद्यानाथ झा 'विदित'क रचना छनि

(क) समय साल (ख) वन्दना

(ग) बच्चा (घ) हाथ

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :-

(i) ताहि भूमिक अर्चनासँ श्रेष्ठ ..... धर्म की ?

(ii) मातृभूमिक वन्दनासँ श्रेष्ठ पावन ..... की ?

(iii) मातृभूमिक माँटि सँ बढ़ि श्रेष्ठ ..... दुलार की ?

3. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) वन्दना किनकर कविता अछि ?

(i) पठित पाठमे वन्दनीय के आ की सभ अछि ?

(iii) पठित पाठमे कविक कहबाक की उद्देश्य अछि ?

(iv) मातृभूमिक वन्दना श्रेष्ठ धर्म थिक किएक ?

(v) पठित पाठमे वर्णित देवताक नाम लिखू।

4. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) 'वन्दना' शीर्षक कविताक वर्णन करू।

(ii) पठित पाठक सारांश लिखू।

(iii) जनक-याज्ञवल्क्यक चर्चा कोन रूपेँ कयल गेल अछि।

(iv) प्रस्तुत कवितामे वर्णित महान व्यक्ति सभक थोड़मे परिचय दिअ।

5. सप्रसंग व्याख्या करू -

(i) जाहि धरती पर जनक केर
दीप्त ज्ञान-विवेक
याज्ञवल्क्यक अमित तेजक
भेल हो अभिषेक ।।

(ii) मातृभूमि माँटि सँ बढ़ि श्रेष्ठ आर दुलार की ?
जन्मभूमि निमित्त शीशक दान सँ लघु आर की ?

गतिविधि-

1. मातृभूमिक वन्दना आनो कवि कयलनि अछि - स्मरण करू आ लिखू ।
2. एहि कविताकेँ सस्वर पाठ करू ।
3. एहि कवितासँ की शिक्षा भेटैत अछि ?
4. पाँच संज्ञा शब्द चुनि वाक्यमे प्रयोग करू।

निर्देश-

1. शिक्षक जनक, याज्ञवल्क्यक, अयाची, जानकी, भारती आदिक सम्बन्धमे छात्रकेँ परिचय कराबथि।
2. मातृभूमिक वन्दना श्रेष्ठ वन्दना थिक, शिक्षक छात्रकेँ बुझाबथि।
3. शिक्षक मातृभूमिक महत्ताक निर्देश करबैत छात्रकेँ बुझयबाक प्रयास करथि जे मातृभूमिक लेल जँ गर्दनि देवय पड़य तँ ओ कम अछि। उदाहरण दऽ समझाबथि।